

इ. वि. का. राजगुरु रोधन मंडळ धुळे.

—: हस संग्रह:—

ग्रंथ क्रमांक

१३८ (१३८)

ग्रंथ नाम

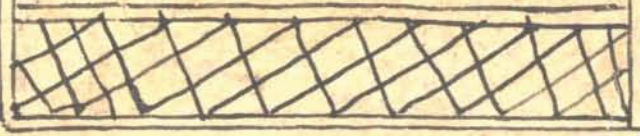
सातांची काव्ये.

विषय

मराठी काव्य.



Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai!



॥ छाओ जल सागर बिधायो लन आपन रहल बेसर
 ॥ मे सदा वोरन हीचा हत हे ॥ कामके सजे गसेत जा
 ॥ नपरो बेसरे मजो ही ज गव वोरजु गल सारहन हे ॥
 ॥ पूरन प्रताप चंद पायो हे मुखार बिंदये तो कंथ कहल
 ॥ हे ये तो विलेन हे ॥ गोरी के बदन को मदन को मदपी
 ॥ विमोती मल वाले सरासू मते ही रहत हे ॥ १ ॥
 ॥ सिंघ मर वरह कोर चीने तर वरो पार कुले हें कु मद
 ॥ मानो विपुल सिंग ॥ तीप्यारी संग बिहर
 ॥ बिहारी बख पु ॥ यारी दल बदन उ
 ॥ जयारो हे ॥ कानने ॥ टुट परं पयो धर स
 ॥ पेधर नीपेठरत कने ॥ पुन कारो हे ॥ रोस प्र
 ॥ गरपूर जिय जान के कलें को कूर मानो चंद
 ॥ चूर चंद चूर कर जोरो हे ॥ २ ॥ ६९ ६९
 ॥ सीस फूल गजदाक जे हरजमीर ज जी पाषर बसन छेइ
 ॥ थंदा गहरात हे ॥ घूगट जय यारी जरे सखी गजरा
 ॥ जसंगरी क्षत थजा पटपीत फहरात हे ॥ सुमल प्रज



Project: The Prayag Sanshodhan Mandal, Dhule
 Chavan Pratishthan, Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai
 "equum"

॥ लमदन मके पटे जो चुहाल जा मदन माहावके जा कुस

॥ नहाथ हे ॥ सोरे हू सिंग सज स्या मा च वी स्या म धाम मा

॥ नोग जराज ~~खे~~ गाटे पर जात हे ॥ २॥ ५ ६

॥ छिप दे छिपा को छिप जान दे छिप कर को जा

॥ लुर हे मोहन को मन ललन न दे ॥ हो न रे ज क ले

॥ कान कुवर को रे स्या ~~न~~ न न न मे नी

॥ सुमा जे रे नीले ~~व~~ स नु तार न दे

॥ पिय के सिय मे न ~~न~~ दे ॥ जान ए ख मा

॥ नकी सो मान जग ~~ज~~ ल हो क है या जू

॥ पे जु न या ने क जान ~~द~~ ॥ ६ ७

॥ के लि करी र ल ना गर सां अ लि मोर मई उठ मं जन आई ॥

॥ निव के चीर मे कां लि दि पे ज मु ना जं ल मे जे सि चंद की छा

॥ ई ॥ त्वे डुब की जल सो निक सी अ व कें वि द्युरी मुख

॥ उपर आई ॥ हाल सो बार मार दिये नि क सो स सि

॥ फेर पा हार के लाई ॥ ११ ॥ ६९ ॥ ६९ ॥



Project of the Yashwantrao Chavan Pratishthan, "Jagwan" Number 10, "Sanskrit Mahan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan"

(५)

॥ सासरहे न्यारी ननदी मायके सिधारी निसिभादे

॥ कीअथयारी सूसे नकरहे ॥ पियुको गवनला लेसु

॥ हावेना मुवन दारानवहेरी पवन कामे सरवागी हे

॥ संगनसहेली मेतौवेसहु नवेली अलबेळी अकेळी

॥ वगने सरवागी हे ॥ अनगरी अथारी जियरो मे

॥ रो उरा लजगजा चोरको उरहे ॥ १५ ॥

॥ जनक दुखारिसिगा ई देवको सो भ

॥ श्रीदसरधकु वारकी ॥ उपमास मरधको

॥ नके हवेको रगुने बोडी अनारकी ॥

॥ काहः तवल देव संगसकी समारती हे गो ही अ

॥ नोषीलट गजमो निमै वारकी ॥ राम उ प देववेको

॥ ठाडी अलबेळी प्यारी वाजु वंद बाधे वाजु पकरेकी

॥ वारकी ॥ १॥ बोळी बीजवा ला कर जोर श्री स्यां मजु

॥ सो फिरत हो भुजाने के कवी आपचेत हो ॥ उपकी सो

॥ अगरी कटको मिल् चमेळी येसी तिनको सो याग



(5)
 त सुषुक्वजादेतहोगने जकेतत गोपीहसें स्याप्रजुसो
 वेदेतनज्वं ववक्व तहोग करतजवप्रसंग
 आपऐसीपानारस ददेतकेतो गगडषो
 दलेतहोगने



"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

कवित (6)

ब्रिंदासी चंद्रमनेक छलीं तह कूषरी नेह को रूहत
 को हे ॥ भीर की नाव भयो मनयो तब जान परी हम
 को जगयो हे ॥ राधु रवे रजवा कुर हे सो वनी
 नवनी उन को सव सांखी पीर के डे बडे जात
 बहे तह हो लिये तार के त को हे ॥ १३ ॥
 ॥ दोज के चांदर ॥ त हे ले मु सटा
 ॥ कचली धुज बा ॥ उके हे स तो का
 ॥ दुकि ना गि क ॥ त तो का कि क द्वा
 ॥ सि ॥ आगे जो मोहन ठां उ हे लै कू क सुना जब
 ॥ यम चार जो हा सी ॥ घु गट को पट दूर
 ॥ गयो तब दोज की हो गई पुर्ण मा सी ॥ १४ ॥



Joint Project of the
 Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(7)

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥
॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकुलदेवतायै
॥ नमः ॥ श्रीसितारामचंद्रायनमः ॥
॥ अथसभापर्वआर्याप्रारंभः ॥ श्रीशिव
॥ पांचाळीपतिसमूहेमयकाहीसांग
॥ आपुलीसेवा ॥ पार्यसूणेसख्यअसो
॥ अथवाहेमागयादवादेवा ॥ १ ॥
॥ श्रीपतिवास ॥ चमकारकेरि
॥ जनकमया ॥ निचिरसभास्थाना
॥ निदोवरलकनकमया ॥ आज्ञाकरुनि
॥ औसीप्रभुमेरुनिसबहुमानधभीते ॥
॥ स्वपुंरीसजायमगकरिभगवदुदितदैश
॥ विश्वकर्माते ॥ ३ ॥ देवानिहिकरावाज्या
॥ चास्वैशार्थनवसभायाते ॥ अनृणस्वा

॥ थमियासुरनिर्मुनिदेदिव्यनवसभायाते ॥
 ॥ स्थळतेजळजळतेस्थळभासेजीमाजिरन
 ॥ सारसभा ॥ भुळवी १३ मरा ३ मरा सहितीं
 ॥ चित्रेचि ॥ सारसभा ॥ ५ ॥ श्रीमाळाआणु
 ॥ निदेवृषपर्वाच्याग होतमगदेते ॥ ह्मणतिरिपु
 ॥ जिचेंदरनिआ ॥ सुरुतेहिमगदेते ॥ ६ ॥
 ॥ देदेवकुशं ॥ मजुनासिदासमय ॥
 ॥ वेमागोनिअसें ॥ टीळावसोसदास
 ॥ मय ॥ ७ ॥ त्यामयसभेतशोभेधर्मसुधर्मा
 ॥ सभेतवासवसा ॥ बुधअन्योन्यक्षणतिकां
 ॥ जातांहोहाचिनाकवासवसा ॥ ८ ॥ अर्थिज
 ॥ नासहधाडुनिगुणदेसाधूसिधर्मसहवास
 ॥ कमळाकरमधुपातेजेवीप्रेषूनिवायुसहवास ॥



॥ नवनवनवळकरायानधरीलेशहिइचीच

॥ आळसभा ॥ राजर्षिमहर्षिसकळयेथेन्युन्या

॥ चिभुमिपाळसभा ॥ १० ॥ निसुनवेचिमहोस

॥ वकोटीचेत्यासभेतभरभरती ॥ विस्तरकशा

॥ सिपरिहरिदासाधरि ॥ वीउदंडभरभरती ॥

॥ तेथेंज्ञानविश ॥ शशिगौरगौरवा

॥ हकवी ॥ दुस्तर ॥ पारदनारदयेउ

॥ निंनितिलारि ॥ तधरणप्रक्षाकु

॥ निजेचिंतिपरमहर्षितेपांणी ॥ सोडुनि

॥ जोडिलेकुरुकुलतिलकेंपरमहर्षितेपांणी ॥

॥ तोमुनिधर्मासिंलणेवासत्यकरीपिताप

॥ रमतोकीं ॥ तैसेंभवान्स्वसृष्टीकरुनिनि

॥ वासेंनितापरमतोकीं ॥ १४ ॥ जैराजधर्म

॥ सुरतरु सरवमखसेसुरवद्वृद्धवदनाकीं ॥

॥ यासिजपोनि गुरुच्या देसीयशपरमशुद्धव

॥ दनाकीं ॥१५॥ वेतत आलेजेसेपुरुषकुलज

॥ साधुभीष्मपयेत ॥ वतीसितसेंचिकींतूकरि

॥ सीकींसुरवयशोशचयेत ॥१६॥ नामखरे

॥ केलेंकीसुर कौटिकेकीतें ॥ सुय

॥ शातसाकवीत कवणांनुकोटिकेकी

॥ तें ॥१७॥ तुमचा प्रसाद साबहुकायवदें

॥ तुम्हांपुढें देवा ॥ तुमचा प्रसाद इष्टुनिकरि

॥ तों सत्रासदासमीसेवा ॥१८॥ युष्मत्पदरा

॥ ज्यपदप्रभुजीकरितो जपोनिपरिचरण ॥

॥ मीतो अशकमंदचितुमचे श्रितकल्पवृक्ष
परिचरण ॥१९॥

- १) यापरिवहोनिहितमितवर्णकिर्णमृतास्व
 २) तावचना ॥ मुनिसमूहेणं धर्मतुंहीविश्वाची
 ३) सर्वजाणतारचना ॥ २० ॥ मयकृतसभाज
 ४) सीहेऐसीकीईपरीसजगिबरवी ॥ कोठेअ स
 ५) सेलसांग ॥ मयजगद्वसंअसानरकी ॥
 ६) हांसोनिमूणेना ॥ हेचिदिव्यरुचि
 ७) राज्या ॥ ऐकसभा ॥ तोंदेव्याइपरी
 ८) सरुचिराजा ॥ २२ ॥ शकिसभासार्धशतक
 ९) योजनदीधतसीचविस्तिर्ण ॥ शतयोजन
 १०) तदाश्रितजनतातीसर्वदुःखनिस्तिर्ण ॥ २३
 ११) वाल्मिकमुनीपराशरदुवसिायाज्ञवल्पर
 १२) मुख्यमख ॥ तेषुशुक्रहस्पतिजलद

॥ गंगा यमुना विदिशारत्यादि नद्या उपासितीव
 ॥ रुणा ॥ त्या वरि वरुण समेची वसाची सुरभि
 ॥ वरि जसी करुणा ॥ ३० ॥ धर्माची धनदसभाती
 ॥ ही शत योजयतारभ्या ॥ शम्या नंद करीसी
 ॥ शिव पूजा तत्तने तरांभ्या ॥ ३१ ॥ शिव सखस
 ॥ भेंत निरूपम सुख सुर मुनि सिध मूर्त नगव
 ॥ सती ॥ तेथे चिने पाहावे जेजे अन्यत्र संतन
 ॥ गवसती ॥ ३२ ॥ अथ मज्जा
 ॥ ही नोच एकथ रत्ना समरहरण
 ॥ रत्ना कंठ नवदे थाराही ॥ ३३ ॥ जो
 ॥ हा भगवान् ते जो मंडळ रूपी जंगास भास
 ॥ वित ॥ कथितां पूर्वी सिद्धु रचि मजस भजे
 ॥ अगस भास विना ॥ ३४ ॥ तद्दर्शन कामु
 ॥ कमी पुसता जाळो उपाय तपना ते वदळा
 ॥ रविकीत पकर जपता ते कितिसमर्थ तपन
 ॥ ३५ ॥

॥ केलेंतपतपनोदितदशशतवर्षेहिमाचं

॥ व्हीमगमी ॥ जालेंकृतक्षयतपीबुहुराकि

॥ नपारिजातिकीअगमी ॥३६॥ ब्रंमहसभाचि

॥ गुरुसभातन्युनावर्णिल्यासुरसभाज्या ॥ देव्यु

॥ शशाकभाजाकीनाहेशाकसासुरसभाज्या ॥

॥ प्रभुमुसिसः ॥ याकांमदासभा

॥ वाचे ॥ यहाहनिन ॥ हुमास्यातीकामदा

॥ सभावाचे ॥३७॥ अजेअसोनिवोकीजंग

॥ मकीस्थाणुसर्वतेव्यक्त ॥ म्यांपाहिलेनृपाप

॥ रिहरिमुतिजसेचिपाहतोअक्त ॥३९॥ कथि

॥ ल्याविलोकिल्याइयांसाचिसभातूजपां

॥ चवीराजा ॥ रथेंतुसीहिअधिकाजसिया

॥ चौथीं तपाचवी राज्या ॥ ४० ॥ धर्म म्हणे गुरु

॥ राया पुरवी मासी हि ही दुजी आळ ॥ त्यां यम

॥ धर्म सभेंत चिकथिले कीं प्रायशः क्षमा पाळ ॥ ४१

॥ वरुण सभेंत दिति दनुज सरिद ब्यिव्याळ

॥ वर्णिले लक्ष्मण ॥ ४२ ॥ सभेंत गायकराक्ष

॥ सगंधर्व अस्यरा ॥ ४३ ॥ ब्रं म्ह सभेंत

॥ महर्षि श्रुतिशास्त्र गुण दलेंते सर्वा ॥ शक्रा

॥ दि लोक पाळक कथिले मुनिवाला खिळ्य ह

॥ रिशर्व ॥ ४३ ॥ इंद्र सभेंत सकळ सुर गंधर्व

॥ वरास्परा परमहर्षि ॥ त्यांत हरिचंद्र नृप

॥ तीये कचि सुरनाथ सापरमहर्षि ॥ ४४ ॥ पु



॥ धर्मिणासुरनिमुनिदेदिव्यनक्सभाया

॥ ६॥ ॥ ४॥ प्यहरिचंद्राचेंकायप्रियज्यास्त

॥ वत्रिदशपतिका ॥ हे सांगोनि स्वामीयाशि

॥ व्याच्या प्रमोदघामतिका ॥ ४५ ॥ देवर्षि म्हणे

॥ नृपतोसा श्रावण सुराज सुखमखकर्ता ॥

॥ इतरकरदप. रुहरिचंद्रसर्वभू

॥ भर्ता ॥ ४६ ॥ स रे चंद्रापाहनितव

॥ तातपांडुवदळाहो ॥ की सांगसुतासिमुने

॥ जेणें तेंसेचिंमिंहिपदळाहो ॥ ४७ ॥ सुरप

॥ तिसभेंतभोगुनिसौरव्यतवपिताम

॥ हासर्वेसाधो ॥ हे नादसीकतूहीस यज्ञ

॥ पितृप्रपितामहासर्वेसाधो ॥ ४८ ॥

॥ हाराजसूयमहिमापरियाचिसिद्धिदुर्घर

॥ स्पष्ट ॥ बहुविघ्नक्षत्रक्षयकर्ताबहुमग

॥ हिपावतोकष्ट ॥ ४९ ॥ सांगोनिअसेंगेवा

॥ मुनिदृष्णापहाक्यासितेथुनी ॥ कींसुस्त

॥ हिनअसेनेघरं निजस्यतेथुनी ॥

॥ धर्महर्णकष्ट ॥ असेलपरिता हो

॥ त ॥ कावापुर्णिते ॥ सुत्रगुरुकसर्व

॥ करितात ॥ ५१ ॥ पुसतां कृतिबंधूव्यास

॥ हि सचिवात्प हृणति देवाहूं ॥ देशगुरु

॥ ककरावै ॥ स घशनदीस सर्वथानदेवा

॥ हं ॥ ५२ ॥ धर्मलणेसिचिभजेयन्मत्राजेवि

॥ वोसवारंभां ॥ त्यास्वसख्याप्रथमपुसां



- ॥ मंत्रमगकरुशिवासवारंभा ॥ ५३ ॥ करुनि
 ॥ विचारअसापटुतेकांहुतघाडि लामुरारि
 ॥ कडे ॥ जावेचरणस्मरणेअसत्घटित्त
 ॥ सर्वकार्यसिद्धिघडे ॥ ५४ ॥ तोइंद्रसेन
 ॥ नामादूतनहेशुधभावरायाचा ॥ कींत
 ॥ इतिवधूचाहारश्रीवल्लुभावरायाचा
 ॥ ५५ ॥ मधुपात्राजसायनाप्रतिआणिब
 ॥ केकरुनि ॥ येउनिआलाधर्मा
 ॥ प्रतिअयुत्सुनेदेवास ॥ ५६ ॥
 ॥ त्यासंकल्लेके ॥ आसन्नोभिरामा
 ॥ ते ॥ धर्मकथिपितृवाचिकजनितोक्त
 ॥ ठराजसूयकामाते ॥ ५७ ॥ कृष्णहृणे
 ॥ कुररायाधन्यहृणतसेसदैवशक्रतुळा ॥
 ॥ तूंकरिसीळबापास्वगुणांहीकोणयावश
 ॥ क्रतुळा ॥ ५८ ॥ परियेकजरासंघप्रबळका

॥ क्षितिपाळकाळ अजिततसा ॥ स्याचिपळा

॥ कोंत्रासें ज्या आहांतुहि बहुतमोजितसा ॥

॥ करिति नूतन वतन पतन मतन भल्याला

॥ हितदपिते वरिति ॥ सजिवी स्वराजधानी

॥ मथुरा अमरावती चमूचरीती ॥ ६० ॥ मूधा

॥ भिशिकराने पशुपति वदु आहेत ॥

॥ पशुपति पुढें वदु सायाकुबुद्धि

॥ चाहेत ॥ ६१ ॥ हनेनेने राजे वड

॥ शीतिकोडे अरण्य असुहुरु

नदधि

॥ निवसुं स्वसि त नगणिकालसी असती ॥ ६२ ॥

॥ साराज्यांला मुक्तन करिता ह्या नवधितां ज

॥ रासंधा ॥ सा म्राज्य राजसूय कैचे इतरासु

॥ दुस्तरासंधा ॥ ६३ ॥ धर्म म्हणें अधरिततूं

॥ म्हणसित रिघडे लकाय अन्यास ॥ तरिराज





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com